

॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

साहंप्रसादयेकृष्णत्वामद्यशिरसानता ॥ पृथेयद्रौपदीचैवताः पश्यपुरुषोत्तम ॥ १ ॥ यदाद्रोणसुतोगर्भान्यादुनांहंतिमाधवा ॥ तदाकिलत्वयाद्रौणिः क्रुद्धेनोक्तोरि  
मर्दन ॥ १० ॥ अकामंत्वांकरिष्यामिब्रह्मबंधोनराधम ॥ अहंसंजीवयिष्यामिकिरीटितनयात्मजं ॥ ११ ॥ इत्येतद्वचनं श्रुत्वा जानानाऽहंबलंतव ॥ प्रसादयेत्वां  
दुर्धर्षजीवतामभिमन्युजः ॥ १२ ॥ यद्येतत्त्वंप्रतिश्रुत्यनकरोषिवचः शुभं ॥ सकलं वृष्णिशार्दूलमृतां मामवधारय ॥ १३ ॥ अभिमन्योः सुतो वीरनसंजीवितिय  
द्ययं ॥ जीवित्वयि दुर्धर्षं किं करिष्याम्यहं वया ॥ १४ ॥ संजीवयैनं दुर्धर्षमृतं त्वमभिमन्युजं ॥ सदृशाक्षसुतं वीरसस्य वर्षन्निवांबुदः ॥ १५ ॥ त्वंहिकेशवधर्मा  
त्मासत्यवान्सत्यविक्रमः ॥ सतांवाचमृतां कर्तुमर्हसि त्वमर्दिदम ॥ १६ ॥ इच्छन्नपि हिलोकां स्त्रीनजीवयेथा मृतानिमान् ॥ किंपुनर्दयितं जातं स्वस्त्रीयस्यात्मजं  
मृतं ॥ १७ ॥ प्रभावज्ञास्मिते कृष्णतस्मात्त्वांयाचयाम्यहं ॥ कुरुष्वपांडुपुत्राणामिमं परमनुग्रहं ॥ १८ ॥ स्वसेतिवामहाबाहो हतपुत्रेति वापुनः ॥ प्रपन्नानामभियं  
चेति दयां कर्तुमिहाहसि ॥ १९ ॥ इति श्रीमहाभारते आश्वमेधिके पर्वणि अनुगीता पर्वणि सुभद्रावाक्ये सप्तषष्ठितमोऽध्यायः ॥ ६७ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

वैशंपायन उवाच ॥ एवमुक्तस्तुराजं द्रकेशिहादुःखमूर्छितः ॥ तथेति व्याजहारोच्चैर्हृदयन्निवतंजनं ॥ १ ॥ वाक्येनैतेन हितदातंजनं पुरुषर्षभः ॥ ह्लादयामास  
सर्विभुर्धर्मतंसलिलैरिव ॥ २ ॥ ततः सप्राविशत्तूर्णजन्मवेदमपितुस्तव ॥ अर्चितं पुरुषव्याघ्रसितैर्माल्यैर्यथाविधि ॥ ३ ॥ अपांकुभैः सुपूर्णैश्च विन्यस्तैः सर्वतो  
दिशं ॥ घृतेन तंदुकालातैः सर्षपैश्च महामुज ॥ ४ ॥ अखैश्च विमलैर्न्यस्तैः पावकैश्च समंततः ॥ वृद्धाभिश्चापिरामाभिः परिचारार्थमावृतं ॥ ५ ॥ दक्षैश्च परितो  
धीरभिषग्भिः कुशलैस्तथा ॥ ददर्श च स तेजस्वी रक्षोघ्नान्यपि सर्वशः ॥ ६ ॥ द्रव्याणि स्थापितानि स्मविधिवत् कुशलैर्जनैः ॥ तथायुक्तं च तद्दृष्ट्वा जन्मवेदमपितुस्त  
व ॥ ७ ॥ तद्गोभवद्भूषीकेशः साधुसाध्विति चाब्रवीत् ॥ तथा ब्रुवति वार्ष्णेय प्रहृष्टवदनेन तदा ॥ ८ ॥ द्रौपदी त्वरिता गत्वा वैराटीं वाक्यमब्रवीत् ॥ अयमायाति तभ  
द्रे श्वशुरो मधुसूदनः ॥ ९ ॥ पुराणैरिचिंत्यात्मासमीपमपराजितः ॥ सापि बाष्पकलांवाचं निगृह्याश्रूणि चैव ह ॥ १० ॥ सुसंवीताऽभवद्देवी देववत्कृष्णमीयुषी ॥  
सा तथा दूयमानेन हृदयेन तपस्विनी ॥ ११ ॥ दृष्ट्वा गोविंदमायां तरुणं पर्यदेव यत् ॥ पुंडरीकाक्षपश्यांवां बालेन हि विनाकृतौ ॥ अभिमन्युं च मां चैव हतौ तुल्यं  
जनार्दन ॥ १२ ॥

एवमुक्त इति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ घृतेन सत्कैरिति शेषः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥